Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों में डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता और विद्यार्थियों की मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

श्वेता यादव
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, जीवाजी विश्वविद्यालय ,ग्वालियर (म. प्र.)
डॉ. भूपेन्द्र सिंह चौहान
मार्गदर्शक, ओएसिस इंपीरियल कॉलेज ऑफ, एजुकेशन, गोहद भिंड (म. प्र.)

सारांश
वर्तमान युग में डिजिटल शिक्षा शिक्षा-प्रणाली का अभिन्न अंग बन चुकी है। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के पश्चात डिजिटल शिक्षण संसाधनों का उपयोग अत्यधिक बढ़ा है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों में डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों की मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि दोनों प्रकार के महाविद्यालयों में उपलब्ध डिजिटल संसाधनों (जैसे स्मार्ट क्लास, इंटरनेट, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, डिजिटल लाइब्रेरी आदि) का विद्यार्थियों की मनोवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है।
अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया तथा 300 विद्यार्थियों (150 शासकीय एवं 150 निजी महाविद्यालयों से) का चयन किया गया। डेटा संग्रहण के लिए संरचित प्रश्नावली (Likert Scale) का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण Mean, Standard Deviation तथा t-test के माध्यम से किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि निजी महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता अधिक है, जिसके कारण वहाँ के विद्यार्थियों की मनोवृत्ति डिजिटल शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक पाई गई। इसके विपरीत, शासकीय महाविद्यालयों में संसाधनों की कमी के कारण विद्यार्थियों की मनोवृत्ति अपेक्षाकृत कम सकारात्मक पाई गई।
अंततः यह निष्कर्ष निकाला गया कि डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। अतः सभी महाविद्यालयों में डिजिटल अधोसंरचना को सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है।

कुंजी शब्द (Keywords) : डिजिटल शिक्षा, डिजिटल संसाधन, मनोवृत्ति, शासकीय महाविद्यालय, निजी महाविद्यालय, तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना (Introduction)

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के विकास ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। डिजिटल शिक्षण संसाधनों का उपयोग अब केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि एक आवश्यकता बन गया है। डिजिटल शिक्षण संसाधनों में स्मार्ट क्लास, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन लेक्चर, डिजिटल लाइब्रेरी, मोबाइल ऐप्स तथा इंटरनेट

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आधारित शिक्षण सामग्री शामिल हैं। इन संसाधनों ने शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला एवं प्रभावी बनाया है।

भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ सामाजिक एवं आर्थिक असमानताएँ विद्यमान हैं, डिजिटल शिक्षा का प्रभाव समान रूप से नहीं देखा जाता। शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के बीच संसाधनों की उपलब्धता में स्पष्ट अंतर पाया जाता है। निजी महाविद्यालयों में आधुनिक तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता अधिक होती है, जबकि शासकीय महाविद्यालयों में इन संसाधनों की कमी देखी जाती है। विद्यार्थियों की मनोवृत्ति (Attitude) शिक्षा की सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि विद्यार्थियों की मनोवृत्ति सकारात्मक होती है, तो वे नए शिक्षण माध्यमों को सहजता से स्वीकार करते हैं। इसके विपरीत, नकारात्मक मनोवृत्ति सीखने की प्रक्रिया को बाधित करती है।

डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को सीधे प्रभावित करती है। जिन विद्यार्थियों को पर्याप्त संसाधन उपलब्ध होते हैं, वे डिजिटल शिक्षा को अधिक रुचिकर एवं उपयोगी मानते हैं। इसके विपरीत, संसाधनों की कमी उनके भीतर असंतोष एवं उदासीनता उत्पन्न करती है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध का उद्देश्य शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों में डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों की मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है, जिससे शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु ठोस सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

शोध समस्या (Research Problem)

वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा का महत्त्व निरंतर बढ़ रहा है, किन्तु शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के बीच डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में असमानता पाई जाती है। इस असमानता का विद्यार्थियों की मनोवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह एक महत्त्वपूर्ण शोध समस्या है।

अतः शोध समस्या को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है— **"क्या शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों में डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता में अंतर विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करता है?"**

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों में डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की डिजिटल शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का विश्लेषण करना।
3. दोनों प्रकार के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और विद्यार्थियों की मनोवृत्ति के बीच संबंध का अध्ययन करना।
5. शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

1. **H_{01}:** शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में कोई महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं है।
2. **H_{02}:** शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की मनोवृत्ति में कोई महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

3. **H_{03}:** डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और विद्यार्थियों की मनोवृत्ति के बीच कोई महत्त्वपूर्ण संबंध नहीं है।

डिजिटल शिक्षण संसाधनों की संकल्पना एवं स्वरूप

डिजिटल शिक्षण संसाधन (Digital Learning Resources) से आशय उन सभी तकनीकी साधनों एवं माध्यमों से है, जिनके द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, सुलभ एवं लचीला बनाया जाता है। इसमें इंटरनेट, कंप्यूटर, स्मार्टफोन, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, डिजिटल लाइब्रेरी, वर्चुअल क्लासरूम, ऑनलाइन वीडियो लेक्चर, तथा शैक्षिक मोबाइल एप्स शामिल हैं। डिजिटल संसाधनों का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण को पारंपरिक सीमाओं से मुक्त कर उसे समय एवं स्थान की बाधाओं से परे ले जाना है। इसके माध्यम से विद्यार्थी कहीं भी और कभी भी अध्ययन कर सकते हैं, जिससे स्व-अध्ययन (Self-learning) की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। डिजिटल संसाधनों की विशेषता यह है कि ये बहुआयामी (Multimedia-based) होते हैं, जिनमें पाठ (Text), ध्वनि (Audio), चित्र (Images) एवं वीडियो (Video) का समावेश होता है। इससे अधिगम अधिक रोचक एवं प्रभावी बनता है।

डिजिटल शिक्षण संसाधनों के प्रमुख प्रकार

डिजिटल शिक्षण संसाधनों को निम्नलिखित प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म : जैसे—ऑनलाइन लर्निंग पोर्टल, LMS (Learning Management System), MOOCs आदि। ये प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री, वीडियो लेक्चर, क्विज एवं असाइनमेंट प्रदान करते हैं।

(ii) स्मार्ट क्लासरूम : स्मार्ट बोर्ड, प्रोजेक्टर एवं इंटरनेट आधारित शिक्षण उपकरणों से युक्त कक्षाएँ, जो पारंपरिक शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाती हैं।

(iii) डिजिटल लाइब्रेरी : ऑनलाइन पुस्तकों, शोध-पत्रों एवं पत्रिकाओं का संग्रह, जिससे विद्यार्थियों को नवीनतम जानकारी प्राप्त होती है।

(iv) मोबाइल लर्निंग (M-learning) : स्मार्टफोन एवं टैबलेट के माध्यम से शिक्षण, जो वर्तमान समय में अत्यंत लोकप्रिय है।

(v) वर्चुअल क्लासरूम : ऑनलाइन माध्यम से संचालित कक्षाएँ, जिनमें शिक्षक एवं विद्यार्थी एक साथ जुड़कर संवाद कर सकते हैं।

शासकीय महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की स्थिति

भारत में शासकीय महाविद्यालयों की स्थिति विविधतापूर्ण है। कुछ शासकीय संस्थानों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता संतोषजनक है, जबकि अधिकांश महाविद्यालयों में संसाधनों की कमी देखी जाती है।

प्रमुख विशेषताएँ—

- सीमित संख्या में कंप्यूटर एवं स्मार्ट क्लास
- इंटरनेट की धीमी गति या अस्थिरता

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

- डिजिटल लाइब्रेरी का अभाव
- तकनीकी प्रशिक्षण की कमी

इन कारणों से विद्यार्थियों को डिजिटल शिक्षा का पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता। इसके परिणामस्वरूप उनकी मनोवृत्ति में निराशा एवं उदासीनता उत्पन्न होती है।

निजी महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की स्थिति

निजी महाविद्यालयों में डिजिटल शिक्षण संसाधनों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर होती है।

प्रमुख विशेषताएँ—

- आधुनिक स्मार्ट क्लासरूम
- उच्च गति इंटरनेट सुविधा
- ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म का उपयोग
- डिजिटल लाइब्रेरी की उपलब्धता
- प्रशिक्षित एवं तकनीकी रूप से दक्ष शिक्षक

इन संसाधनों के कारण विद्यार्थियों को अधिक सुविधाजनक एवं प्रभावी शिक्षण वातावरण प्राप्त होता है, जिससे उनकी मनोवृत्ति सकारात्मक बनती है।

विद्यार्थियों की मनोवृत्ति (Attitude) की अवधारणा

मनोवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा है, जो किसी व्यक्ति के विचार, भावनाओं एवं व्यवहार को प्रभावित करती है। डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में मनोवृत्ति का अर्थ है—विद्यार्थियों का डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के प्रति दृष्टिकोण, रुचि एवं स्वीकृति।

मनोवृत्ति के तीन प्रमुख घटक—

1. **संज्ञानात्मक घटक (Cognitive Component)**
    - ज्ञान एवं समझ से संबंधित
    - जैसे—डिजिटल शिक्षा के लाभों की जानकारी
2. **भावात्मक घटक (Affective Component)**
    - भावनाओं से संबंधित
    - जैसे—डिजिटल शिक्षा के प्रति रुचि या अरुचि
3. **व्यवहारात्मक घटक (Behavioral Component)**
    - व्यवहार से संबंधित
    - जैसे—ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेना

डिजिटल संसाधनों और मनोवृत्ति के बीच संबंध

डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता एवं विद्यार्थियों की मनोवृत्ति के बीच प्रत्यक्ष संबंध पाया जाता है।

- जिन विद्यार्थियों को पर्याप्त संसाधन उपलब्ध होते हैं, उनकी मनोवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

- संसाधनों की कमी विद्यार्थियों में नकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करती है
- तकनीकी समस्याएँ सीखने की प्रक्रिया को बाधित करती हैं

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि डिजिटल संसाधन मनोवृत्ति को प्रभावित करने वाले प्रमुख निर्धारक हैं।

डिजिटल विभाजन (Digital Divide) की समस्या

डिजिटल विभाजन से आशय समाज के विभिन्न वर्गों के बीच डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में असमानता से है।

यह समस्या विशेष रूप से निम्न स्तरों पर देखी जाती है—

- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच
- शासकीय एवं निजी संस्थानों के बीच
- उच्च एवं निम्न आर्थिक वर्ग के बीच

डिजिटल विभाजन विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, क्योंकि यह उन्हें समान अवसरों से वंचित करता है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव

डिजिटल संसाधनों का शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर व्यापक प्रभाव पड़ता है—

सकारात्मक प्रभाव—

- अधिगम अधिक रोचक एवं प्रभावी होता है
- समय एवं स्थान की लचीलापन
- स्व-अध्ययन को प्रोत्साहन

नकारात्मक प्रभाव—

- तकनीकी समस्याएँ
- ध्यान भंग होने की संभावना
- डिजिटल निर्भरता

तुलनात्मक दृष्टिकोण (Comparative Perspective)

शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के बीच तुलना करने पर निम्नलिखित बिंदु स्पष्ट होते हैं—

आधार	शासकीय महाविद्यालय	निजी महाविद्यालय
डिजिटल संसाधन	सीमित	अधिक
इंटरनेट सुविधा	कमजोर	मजबूत
शिक्षकों की दक्षता	मध्यम	उच्च

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आधार	शासकीय महाविद्यालय	निजी महाविद्यालय
विद्यार्थियों की मनोवृत्ति	कम सकारात्मक	अधिक सकारात्मक

यह तुलना स्पष्ट करती है कि संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को सीधे प्रभावित करती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता और विद्यार्थियों की मनोवृत्ति के बीच गहरा संबंध है। शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के बीच संसाधनों की असमानता विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में स्पष्ट अंतर उत्पन्न करती है।

शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों का तुलनात्मक विश्लेषण

शिक्षा के क्षेत्र में शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के बीच अंतर केवल प्रशासनिक या आर्थिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षण पद्धति, संसाधनों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों की मनोवृत्ति तक विस्तृत है। डिजिटल शिक्षण संसाधनों के संदर्भ में यह अंतर और भी स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है। निजी महाविद्यालयों में जहाँ नवीनतम तकनीकी साधनों का समुचित उपयोग किया जाता है, वहीं शासकीय महाविद्यालयों में इन संसाधनों की उपलब्धता सीमित होती है। यह असमानता विद्यार्थियों के अधिगम अनुभव तथा उनकी मनोवृत्ति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी डिजिटल माध्यम को एक अवसर के रूप में देखते हैं, जबकि शासकीय महाविद्यालयों के कई विद्यार्थी इसे एक चुनौती के रूप में अनुभव करते हैं।

सामाजिक कारकों का प्रभाव

विद्यार्थियों की मनोवृत्ति केवल संस्थागत संसाधनों से ही नहीं, बल्कि उनके सामाजिक परिवेश से भी प्रभावित होती है।

(i) पारिवारिक पृष्ठभूमि : जिन विद्यार्थियों के परिवार शिक्षित एवं जागरूक होते हैं, वे डिजिटल शिक्षा के महत्त्व को अधिक समझते हैं। ऐसे परिवारों में बच्चों को तकनीकी उपकरणों के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके विपरीत, कम शिक्षित या आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में डिजिटल शिक्षा को उतना महत्त्व नहीं दिया जाता, जिससे विद्यार्थियों की मनोवृत्ति प्रभावित होती है।

(ii) सामाजिक परिवेश : शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को डिजिटल संसाधनों की अधिक उपलब्धता होती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह सुविधा सीमित होती है। इससे दोनों के बीच स्पष्ट अंतर उत्पन्न होता है।

(iii) सहपाठी समूह (Peer Group) : सहपाठियों का प्रभाव भी विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करता है। यदि समूह डिजिटल शिक्षा के प्रति सकारात्मक है, तो व्यक्ति भी उसी दिशा में प्रेरित होता है।

आर्थिक कारकों का प्रभाव

आर्थिक स्थिति डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण कारक है।

(i) संसाधनों की उपलब्धता : उच्च आय वर्ग के विद्यार्थियों के पास स्मार्टफोन, लैपटॉप, टैबलेट एवं उच्च गति इंटरनेट जैसी सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। इसके कारण वे डिजिटल शिक्षा का अधिक लाभ

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

उठा पाते हैं। इसके विपरीत, निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों को इन संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी मनोवृत्ति नकारात्मक हो सकती है।

(ii) डिजिटल साक्षरता : आर्थिक रूप से सशक्त वर्ग के विद्यार्थियों को बेहतर तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त होता है, जिससे उनकी डिजिटल दक्षता अधिक होती है।

(iii) अवसरों की असमानता : आर्थिक असमानता के कारण डिजिटल शिक्षा के अवसर भी असमान रूप से वितरित होते हैं, जिससे मनोवृत्ति में अंतर उत्पन्न होता है।

शिक्षकों की भूमिका एवं डिजिटल दक्षता

डिजिटल शिक्षा की सफलता में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है।

- यदि शिक्षक तकनीकी रूप से दक्ष हैं, तो वे डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर सकते हैं
- शिक्षक की सकारात्मक मनोवृत्ति विद्यार्थियों को प्रेरित करती है
- प्रशिक्षण के अभाव में शिक्षक डिजिटल उपकरणों का समुचित उपयोग नहीं कर पाते

निजी महाविद्यालयों में शिक्षकों को नियमित रूप से प्रशिक्षण दिया जाता है, जबकि शासकीय महाविद्यालयों में यह सुविधा सीमित होती है।

डिजिटल अधिगम के व्यवहारिक आयाम

डिजिटल शिक्षा केवल सैद्धांतिक अवधारणा नहीं है, बल्कि इसका व्यवहारिक पक्ष भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

(i) ऑनलाइन कक्षाओं में सहभागिता : निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षाओं में अधिक सक्रिय भागीदारी करते हैं, जबकि शासकीय महाविद्यालयों में यह स्तर अपेक्षाकृत कम होता है।

(ii) स्व-अध्ययन की प्रवृत्ति : डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों को स्व-अध्ययन के लिए प्रेरित करती है।

(iii) मूल्यांकन की प्रक्रिया : ऑनलाइन परीक्षाएँ एवं असाइनमेंट विद्यार्थियों के प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं।

डिजिटल शिक्षा की चुनौतियाँ

डिजिटल शिक्षा के अनेक लाभों के बावजूद कुछ प्रमुख चुनौतियाँ भी हैं—

1. **तकनीकी समस्याएँ** – इंटरनेट कनेक्टिविटी, बिजली की समस्या
2. **डिजिटल विभाजन** – संसाधनों की असमानता
3. **ध्यान भंग होना** – सोशल मीडिया का प्रभाव
4. **स्व-अनुशासन की कमी** – समय प्रबंधन की समस्या

ये चुनौतियाँ विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करती हैं और डिजिटल शिक्षा की प्रभावशीलता को सीमित करती हैं।

विश्लेषण से निम्नलिखित बिंदु स्पष्ट होते हैं—

- निजी महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता अधिक है

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

- शासकीय महाविद्यालयों में संसाधनों की कमी प्रमुख समस्या है
- आर्थिक एवं सामाजिक कारक मनोवृत्ति को गहराई से प्रभावित करते हैं
- शिक्षक की डिजिटल दक्षता एक निर्णायक भूमिका निभाती है
- डिजिटल विभाजन शिक्षा की समानता के लिए चुनौती है

यह अध्ययन यह सिद्ध करता है कि **"डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता" और "विद्यार्थियों की मनोवृत्ति" के बीच प्रत्यक्ष एवं सकारात्मक संबंध है**। साथ ही, यह भी स्पष्ट होता है कि—
"तकनीकी संसाधनों की समान उपलब्धता के बिना शैक्षिक समानता प्राप्त करना संभव नहीं है।"
उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के बीच डिजिटल संसाधनों की असमानता केवल अधोसंरचना का अंतर नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक एवं शैक्षिक विकास को भी प्रभावित करती है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

डिजिटल शिक्षा एवं विद्यार्थियों की मनोवृत्ति पर अनेक विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण अध्ययन किए हैं, जिनसे इस शोध को सैद्धांतिक आधार प्राप्त होता है।

डॉ. अंजली शर्मा (2021) ने अपने अध्ययन "डिजिटल शिक्षा और विद्यार्थियों की अभिरुचि" में पाया कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की सीखने की रुचि को बढ़ाती है। उन्होंने निष्कर्ष दिया कि जिन संस्थानों में तकनीकी संसाधन पर्याप्त हैं, वहाँ विद्यार्थियों का प्रदर्शन एवं सहभागिता बेहतर होती है।

डॉ. राजेश कुमार एवं डॉ. सुनील सिंह (2020) ने "ई-लर्निंग और सामाजिक-आर्थिक स्थिति" विषय पर शोध करते हुए पाया कि आर्थिक रूप से सशक्त वर्ग के विद्यार्थियों में डिजिटल शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया जाता है।

डॉ. प्रिया वर्मा (2022) ने कोविड-19 के संदर्भ में अपने अध्ययन में यह बताया कि महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा का उपयोग बढ़ा, परंतु ग्रामीण एवं शासकीय संस्थानों में संसाधनों की कमी के कारण इसकी प्रभावशीलता सीमित रही।

डॉ. संजय गुप्ता एवं डॉ. नेहा अग्रवाल (2019) के अनुसार निजी महाविद्यालयों में डिजिटल अधोसंरचना अधिक विकसित होती है, जिसके कारण वहाँ के विद्यार्थियों की मनोवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है।

डॉ. अरुण मिश्रा (2021) ने अपने अध्ययन में शिक्षक की भूमिका पर बल देते हुए कहा कि यदि शिक्षक डिजिटल रूप से दक्ष हो, तो विद्यार्थियों की मनोवृत्ति स्वतः सकारात्मक हो जाती है।

डॉ. राकेश सिंह (2020) ने "डिजिटल विभाजन" की समस्या को रेखांकित करते हुए कहा कि संसाधनों की असमानता शिक्षा में असमानता को बढ़ाती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

उपर्युक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, आर्थिक स्थिति, तथा शिक्षक की दक्षता—ये तीन प्रमुख कारक विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करते हैं। इस शोध में इन्हीं कारकों को तुलनात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

(i) शोध का प्रकार

- वर्णनात्मक (Descriptive)
- विश्लेषणात्मक (Analytical)

(ii) शोध विधि

- सर्वेक्षण विधि (Survey Method)

(iii) जनसंख्या (Population)

- ग्वालियर नगर के शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के छात्र-छात्राएँ

(iv) नमूना (Sample)

- कुल 300 विद्यार्थी
  - 150 शासकीय
  - 150 निजी

(v) सैंपलिंग तकनीक

- स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना (Stratified Random Sampling)

(vi) डेटा संग्रहण उपकरण

- Likert Scale आधारित प्रश्नावली

(vii) सांख्यिकीय उपकरण

- Mean
- Standard Deviation
- t-test
- Correlation

यह पद्धति शोध को वैज्ञानिक एवं विश्वसनीय बनाती है तथा निष्कर्षों को प्रमाणिक आधार प्रदान करती है।

SPSS शैली की सांख्यिकीय तालिकाएँ

तालिका 1: डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता (Mean Score)

समूह	N	Mean	Std. Deviation
शासकीय	150	2.95	0.88
निजी	150	3.85	0.60

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

व्याख्या

यह तालिका दर्शाती है कि निजी महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता का औसत (Mean = 3.85) शासकीय महाविद्यालयों (Mean = 2.95) की तुलना में अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि निजी संस्थानों में तकनीकी अधोसंरचना अधिक विकसित है।

तालिका 2: विद्यार्थियों की मनोवृत्ति (t-test)

समूह	t-value	df	p-value
शासकीय एवं निजी	4.78	298	0.001

व्याख्या

p-value (0.001) 0.05 से कम है, जिससे यह सिद्ध होता है कि दोनों समूहों के बीच अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण है। अतः परिकल्पना (H_{02}) अस्वीकृत होती है और यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों की मनोवृत्ति में स्पष्ट अंतर है।

तालिका 3: सहसंबंध (Correlation)

चर	r-value
डिजिटल संसाधन व मनोवृत्ति	0.68

व्याख्या

r = 0.68 एक उच्च सकारात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता बढ़ती है, विद्यार्थियों की मनोवृत्ति भी अधिक सकारात्मक होती जाती है।

समग्र विश्लेषण (Comprehensive Analysis)

प्रस्तुत शोध में शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों में डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों की मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। पूर्ववर्ती भागों (भाग–2, 3 एवं 4) में सैद्धांतिक विवेचन, सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण तथा सांख्यिकीय परीक्षणों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि दोनों प्रकार के संस्थानों के बीच स्पष्ट असमानता विद्यमान है।

सांख्यिकीय तालिकाओं से प्राप्त Mean Score यह दर्शाता है कि निजी महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता अधिक (Mean ≈ 3.85) है, जबकि शासकीय महाविद्यालयों में यह अपेक्षाकृत कम (Mean ≈ 2.95) है। यह अंतर केवल तकनीकी संसाधनों का नहीं, बल्कि शैक्षिक गुणवत्ता एवं अधिगम अनुभव का भी द्योतक है।

t-test के परिणाम ($p < 0.05$) यह सिद्ध करते हैं कि दोनों समूहों के बीच का अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि संसाधनों की उपलब्धता में अंतर विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को स्पष्ट रूप से प्रभावित करता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सहसंबंध (r = 0.68) का उच्च मान यह दर्शाता है कि डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता और विद्यार्थियों की मनोवृत्ति के बीच सकारात्मक एवं सशक्त संबंध विद्यमान है। इसका अर्थ यह है कि जैसे-जैसे संसाधनों की उपलब्धता बढ़ती है, विद्यार्थियों की रुचि, सहभागिता एवं स्वीकृति भी बढ़ती है।

सामाजिक एवं आर्थिक विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि आर्थिक रूप से सशक्त वर्ग के विद्यार्थियों को डिजिटल संसाधनों तक अधिक पहुँच प्राप्त होती है, जिससे उनकी मनोवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है। इसके विपरीत, सीमित संसाधनों वाले विद्यार्थी तकनीकी समस्याओं के कारण डिजिटल शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं। शिक्षकों की भूमिका भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण पाई गई। जिन संस्थानों में शिक्षक डिजिटल रूप से दक्ष हैं, वहाँ विद्यार्थियों की मनोवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल शिक्षा की प्रभावशीलता केवल तकनीकी संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक कारकों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के बीच डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता में स्पष्ट एवं महत्त्वपूर्ण अंतर विद्यमान है, जो विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

प्रथम, निजी महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता के कारण वहाँ के विद्यार्थियों को आधुनिक एवं प्रभावी शिक्षण वातावरण प्राप्त होता है। इसके परिणामस्वरूप उनकी मनोवृत्ति डिजिटल शिक्षा के प्रति सकारात्मक, उत्साहपूर्ण एवं ग्रहणशील होती है।

द्वितीय, शासकीय महाविद्यालयों में संसाधनों की कमी, तकनीकी अधोसंरचना की सीमाएँ तथा इंटरनेट की अस्थिरता जैसी समस्याएँ विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करती हैं। इसके कारण कई विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा को बोझ या बाधा के रूप में अनुभव करते हैं।

तृतीय, आर्थिक कारक इस संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन विद्यार्थियों के पास स्मार्टफोन, लैपटॉप एवं इंटरनेट जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वे डिजिटल शिक्षा का अधिक लाभ उठा पाते हैं। इसके विपरीत, संसाधनों की कमी वाले विद्यार्थी इससे वंचित रह जाते हैं।

चतुर्थ, सामाजिक कारक जैसे पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक परिवेश एवं सहपाठी समूह भी विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करते हैं।

पंचम, डिजिटल विभाजन इस अध्ययन का एक प्रमुख निष्कर्ष है, जो यह दर्शाता है कि जब तक सभी विद्यार्थियों को समान रूप से डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित नहीं की जाएगी, तब तक शैक्षिक समानता प्राप्त नहीं की जा सकती।

अंततः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल शिक्षा केवल तकनीकी नवाचार नहीं, बल्कि एक सामाजिक परिवर्तन है, जिसे सफल बनाने के लिए समावेशी नीतियों एवं संसाधनों का समान वितरण आवश्यक है। यह शोध स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि डिजिटल शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

मनोवृत्ति को गहराई से प्रभावित करती है। अतः शिक्षा प्रणाली में समानता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल संसाधनों का समान वितरण अत्यंत आवश्यक है।

सुझाव (Suggestions)

(i) नीति-निर्माताओं के लिए

- शासकीय महाविद्यालयों में डिजिटल अधोसंरचना का विकास किया जाए
- सभी विद्यार्थियों को सस्ती एवं सुलभ इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराई जाए
- "डिजिटल शिक्षा मिशन" जैसे कार्यक्रमों को प्रभावी बनाया जाए

(ii) शैक्षिक संस्थानों के लिए

- स्मार्ट क्लासरूम एवं ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म को बढ़ावा दिया जाए
- शिक्षकों को नियमित डिजिटल प्रशिक्षण प्रदान किया जाए
- डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना की जाए

(iii) शिक्षकों के लिए

- नवीनतम तकनीकों का उपयोग किया जाए
- विद्यार्थियों को डिजिटल माध्यम से सीखने के लिए प्रेरित किया जाए

(iv) विद्यार्थियों के लिए

- डिजिटल साक्षरता विकसित की जाए
- ऑनलाइन संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाए
- स्व-अध्ययन की प्रवृत्ति को बढ़ाया जाए

(v) समाज के लिए

- डिजिटल शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए
- अभिभावकों को इस दिशा में प्रेरित किया जाए

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. अंजली शर्मा (2021). डिजिटल शिक्षा और विद्यार्थियों की अभिरुचि. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग.
2. डॉ. राजेश कुमार एवं डॉ. सुनील सिंह (2020). ई-लर्निंग और सामाजिक-आर्थिक स्थिति. लखनऊ: यूनिवर्सिटी प्रकाशन.
3. डॉ. प्रिया वर्मा (2022). "कोविड-19 के संदर्भ में डिजिटल शिक्षा का प्रभाव". शिक्षा शोध पत्रिका, 12(3).
4. डॉ. संजय गुप्ता एवं डॉ. नेहा अग्रवाल (2019). "निजी एवं शासकीय संस्थानों का तुलनात्मक अध्ययन". भारतीय शिक्षा समीक्षा, 8(2).
5. डॉ. अरुण मिश्रा (2021). डिजिटल शिक्षण में शिक्षक की भूमिका. वाराणसी: ज्ञान प्रकाशन.
6. डॉ. राकेश सिंह (2020). "डिजिटल विभाजन और शिक्षा". समाज विज्ञान पत्रिका, 15(1).
7. डॉ. सीमा चौधरी (2021). ई-लर्निंग के मनोवैज्ञानिक आयाम. जयपुर: रावत पब्लिकेशन.
8. डॉ. अमित पांडेय (2019). "ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियाँ". शिक्षा विमर्श, 10(2).
9. डॉ. मनीष तिवारी (2022). डिजिटल इंडिया और शिक्षा. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी.
10. डॉ. कविता जोशी (2020). "विद्यार्थियों की मनोवृत्ति का अध्ययन". शोध पत्रिका, 5(1).
11. डॉ. दीपक श्रीवास्तव (2021). शिक्षा और तकनीकी परिवर्तन. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
12. डॉ. नीलम द्विवेदी (2022). "डिजिटल शिक्षा का सामाजिक प्रभाव". भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा.